<https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%95%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6&oldid=4295252>

कश्मीर विवाद कश्मीर पर अधिकार को लेकर [भारत](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4) और [पाकिस्तान](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A4%BF%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%A8) के बीच 1947 से जारी है। इसको लेकर पाकिस्तान ने भारत पर तीन बार हमला किया और तीनो बार उसे बुरी तरह से पराजय मिली! 1971 के युद्ध में तो भारत ने पलटवार करते हुए पाकिस्तानी सेना को इस्लामाबाद तक खदेड़ दिया था! और लगभग आधे पाकिस्तान पर कब्जा कर लिया परन्तु पाकिस्तान के आत्मसमर्पण भारत में विलय के लिए विलय-पत्र पर दस्तखत किए थे। गवर्नर जनरल माउंटबेटन ने 27 अक्टूबर को इसे मंजूरी दी। विलय-पत्र का खाका हूबहू वही था जिसका भारत में शामिल हुए अन्य सैकड़ों रजवाड़ों ने अपनी-अपनी रियासत को भारत में शामिल करने के लिए उपयोग किया था। न इसमें कोई शर्त शुमार थी और न ही रियासत के लिए विशेष दर्जे जैसी कोई मांग। इस वैधानिक दस्तावेज पर दस्तखत होते ही समूचा जम्मू और कश्मीर, जिसमें पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाला इलाका भी शामिल है, भारत का अभिन्न अंग बन गया। अब हम बात करते हैं कि किस तरह आधे कश्मीर पर कब्जा किया गया।

Kashmir dispute is going on between India and Pakistan since 1947 over the authority on Kashmir. For this, Pakistan had attacked thrice on India and all three times it was severely defeated. During 1972 war, Indian army even retaliated and pushed the Pakistani army to Islamabad. India had almost captured half of Pakistan but the surrender of Pakistan was signed for merger with India. Governor General Mountbatten approved it on 27th of October. The blueprint of the merger letter was exactly what the hundreds of other princely states who had joined India used to include their princely states in India. There was neither a condition nor a demand for special status for the princely state. As soon as this legal document was signed, the entire Jammu and Kashmir, including the illegally occupied area of ​​Pakistan, became an integral part of India. Now let’s talk about how half of Kashmir was captured.

यहां हम बात करेंगे कश्मीर की, जम्मू और लद्दाख की। भारत के इस उत्तरी राज्य के 3 क्षेत्र हैं- जम्मू, कश्मीर और लद्दाख। दुर्भाग्य से भारतीय राजनेताओं ने इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति समझे बगैर इसे एक राज्य घोषित कर दिया, क्योंकि ये तीनों ही क्षे‍त्र एक ही राजा के अधीन थे। सवाल यह उठता है कि आजादी के बाद से ही जम्मू और लद्दाख भारत के साथ खुश हैं, लेकिन कश्मीर खुश क्यों नहीं? हालांकि विशेषज्ञ कहते हैं कि पाकिस्तान की चाल में फिलहाल 2 फीसदी कश्मीरी ही आए हैं बाकी सभी भारत से प्रेम करते हैं। यह बात महबूबा मुफ्ती अपने एक इंटरव्यू में कह चुकी हैं। लंदन के रिसर्चरों द्वारा पिछले साल राज्य के 6 जिलों में कराए गए सर्वे के अनुसार एक व्यक्ति ने भी पाकिस्तान के साथ खड़ा होने की वकालत नहीं की, जबकि कश्मीर में कट्टरपंथी अलगाववादी समय समय पर इसकी वकालत करते रहते हैं जब तक की उनको वहां से आर्थिक मदद मिलती रहती है। वहीं से हुक्म आता है बंद और पत्थरबाजी का और उस हुक्म की तामिल की जाती है। आतंकवाद, अलगाववाद, फसाद और दंगे- ये 4 शब्द हैं जिनके माध्यम से पाकिस्तान ने दुनिया के कई मुल्कों को परेशान कर रखा है। खासकर भारत उसके लिए सबसे अहम टारगेट है। क्यों? इस ‘क्यों’ के कई जावाब हैं। भारत के पास कोई स्पष्ट नीति नहीं है। भारतीय राजनेता निर्णय लेने से भी डरते हैं या उनमें शुतुरमुर्ग प्रवृत्ति विकसित हो गई है। अब वे आर या पार की लड़ाई के बारे में भी नहीं सोच सकते क्योंकि वे पूरे दिन आपस में ही लड़ते रहते हैं, बयानबाजी करते रहते हैं। सीमा पर सैनिक मर रहे हैं पूर्वोत्तर में जवान शहीद हो रहे हैं इसकी भारतीय राजनेताओं को कोई चिंता नहीं। इस पर भी उनको राजनीति करना आती है। कहते जरूर हैं कि देशहित के लिए सभी एकजुट हैं लेकिन लगता नहीं है।

Here we will talk about Kashmir, Jammu and Ladakh. There are 3 regions of this northern state of India - Jammu, Kashmir and Ladakh. Unfortunately, Indian politicians declared the region a state without understanding the geographical location of the region, as all three regions were under the same king. The question arises that Jammu and Ladakh are happy with India since independence, but why is Kashmir not happy? However, experts say that only 2 percent Kashmiris have fallen in this trap of Pakistan, the rest all love India. Mehbooba Mufti has said this in one of her interviews. According to a survey conducted by researchers in London in 6 districts of the state last year, not a single person advocated standing with Pakistan, while the radical separatists in Kashmir keep advocating it from time to time as long as they keep getting financial help from them. From there only they get the instruction for stone pelting and lockdown and their instructions are being followed. Terrorism, separatism, violence and riots - these are the 4 words through which Pakistan has disturbed many countries of the world. Especially, India is the most important target for them. Why? This 'why' has many answers. India has no clear policy. Indian politicians are also afraid of making decisions or an ostrich tendency has developed in them. Now they can’t even think of a cross fight as whole they keep fighting amongst themselves, and they keep commenting at each other. Indian politicians are not worried that their solider are dying at the borders and at the northern fronts. They know how to do politics on their deaths as well. They all say that they all are united for the well being of the Nation, but it does not look like that.

ये विचारणीय हैं : बात कश्मीर की है तो दोनों ही तरफ के कश्मीर के लोग चाहे वे मुसलमान हो या गैर-मुस्लिम, जहालत और दुखभरी जिंदगी जी रहे हैं। मजे कर रहे हैं तो अलगाववादी, आतंकवादी और उनके आका। उनके बच्चे देश-विदेश में घूमते हैं और सभी तरह के ऐशोआराम में गुजर-बसर करते हैं। भारतीय कश्मीर के हालात तो पाकिस्तानी कश्मीर से कई गुना ज्यादा अच्छे हैं। पाक अधिकृत कश्मीर से कई मुस्लिम परिवारों ने आकर भारत में शरण ले रखी है। पाकिस्तान ने दोनों ही तरफ के कश्मीर को बर्बाद करके रख दिया है। भूटान के 10वें हिस्से जितने क्षेत्रफल वाले ‘लैंड लॉक्ड आजाद देश’ से न भारत का भला होगा, न कश्मीरी मुसलमानों का। पाकिस्तान और चीन का इससे जरूर भला हो जाएगा और अंतत: यह होगा कि इसके कुछ हिस्से पाकिस्तान खा जाएगा और कुछ को चीन निगल लेगा। चीन ने तो कुछ भाग निगल ही लिया है। यह बात कट्टरपंथी कश्मीरियों को समझ में नहीं आती और वे समझना भी नहीं चाहते।

This is to be noted: the matter is of Kashmir, but the people of Kashmir on both sides, whether they are Muslims or non-Muslims, are leading lives of misery and pain. It is separatists, terrorists and their masters who are having fun at their cost. Their children roam around the country and abroad and live in all kinds of luxury. The situation in Indian Kashmir is many times better than Pakistani Kashmir. Many Muslim families from Pakistan occupied Kashmir have come and taken refuge in India. Pakistan has ruined Kashmir on both sides. Neither India nor Kashmiri Muslims will be benefitted from the 'Land Locked Azad Desh' area of ​​which is almost the 10th part of Bhutan. Eventually some part of it will be taken by Pakistan and some will be swallowed by China. China has already swallowed some part. The fundamentalist Kashmiris do not understand this and they do not even want to understand this.

ये इतिहास है : 1947 को विभा‍जित भारत आजाद हुआ। उस दौर में भारतीय रियासतों के विलय का कार्य चल रहा था, जबकि पाकिस्तान में कबाइलियों को एकजुट किया जा रहा था। इधर जूनागढ़, कश्मीर, हैदराबाद और त्रावणकोर की रियासतें विलय में देर लगा रही थीं तो कुछ स्वतंत्र राज्य चाहती थीं। इसके चलते इन राज्यों में अस्थिरता फैली थी। जूनागढ़ और हैदराबाद की समस्या से कहीं अधिक जटिल कश्मीर का विलय करने की समस्या थी। कश्मीर में मुसलमान बहुसंख्यक थे लेकिन पंडितों की तादाद भी कम नहीं थी। कश्मीर की सीमा पाकिस्तान से लगने के कारण समस्या जटिल थी अतः जिन्ना ने कश्मीर पर कब्जा करने की एक योजना पर तुरंत काम करना शुरू कर दिया। हालांकि भारत और पाकिस्तान का बंटवारा हो चुका था जिसमें क्षेत्रों का निर्धारण भी हो चुका था फिर भी जिन्ना ने परिस्थिति का लाभ उठाते हुए 22 अक्टूबर 1947 को कबाइली लुटेरों के भेष में पाकिस्तानी सेना को कश्मीर में भेज दिया। वर्तमान के पा‍क अधिकृत कश्मीर में खून की नदियां बहा दी गईं। इस खूनी खेल को देखकर कश्मीर के शासक राजा हरिसिंह भयभीत होकर जम्मू लौट आए। वहां उन्होंने भारत से सैनिक सहायता की मांग की, लेकिन सहायता पहुंचने में बहुत देर हो चुकी थी। नेहरू की जिन्ना से दोस्ती थी। वे यह नहीं सोच सकते थे कि जिन्ना ऐसा कुछ कर बैठेंगे। लेकिन जिन्ना ने ऐसे कर दिया।

This is history: in 1947, partitioned India became independent. At that time, the work of merger of Indian princely states was going on, while the tribes were being united in Pakistan. Here the princely states of Junagadh, Kashmir, Hyderabad and Travancore were delaying the merger, while some independent states wanted the merger to be happened. This led to instability in these states. The problem of merging Kashmir was more complex than the problem of Junagadh and Hyderabad. Muslims were the majority in Kashmir but the number of Pandits was also not small. The problem was complicated due to the border of Kashmir with Pakistan, so Jinnah immediately started working on a plan to occupy Kashmir. Although India and Pakistan had been divided in which the territories had also been settled, Jinnah took advantage of the situation and sent the Pakistani army to Kashmir on 22 October 1947 under the guise of tribal robbers. Rivers of blood were flown in present-day occupied Kashmir. King Harisingh, the ruler of Kashmir, fearing this bloody game, returned to Jammu. There he demanded military assistance from India, but it was too late for the aid to reach there. Nehru had friendship with Jinnah. They could not think that Jinnah would do something like this. But Jinnah did this.

भारत विभाजन के समय तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की ढुलमुल नीति और अदूरदर्शिता के कारण कश्मीर का मामला अनसुलझा रह गया। यदि पूरा कश्मीर पाकिस्तान में होता या पूरा कश्मीर भारत में होता तो शायद परिस्थितियां कुछ और होतीं। लेकिन ऐसा हो नहीं सकता था, क्योंकि कश्मीर पर राजा हरिसिंह का राज था और उन्होंने बहुत देर के बाद निर्णय लिया कि कश्मीर का भारत में विलय किया जाए। देर से किए गए इस निर्णय के चलते पाकिस्तान ने गिलगित और बाल्टिस्तान में कबायली भेजकर लगभग आधे कश्मीर पर कब्जा कर लिया।

At the time of partition of India, the issue of Kashmir remained unresolved due to wavering policy and short-sightedness of the then Prime Minister Jawaharlal Nehru. If the entire Kashmir had been in Pakistan or the whole of Kashmir had been in India, the circumstances might have been different. But this could not happen, because Kashmir was ruled by King Hari Singh and after a long time, he decided that Kashmir should be merged with India. Due to this late decision, Pakistan sent tribes to Gilgit and Baltistan and captured almost half of Kashmir.

भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ाते हुए, उनके द्वारा कब्जा किए गए कश्मीरी क्षेत्र को पुनः प्राप्त करते हुए तेजी से आगे बढ़ रही थी कि बीच में ही 31 दिसंबर 1947 को नेहरूजी ने यूएनओ से अपील की कि वह पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी लुटेरों को भारत पर आक्रमण करने से रोके। फलस्वरूप 1 जनवरी 1949 को भारत-पाकिस्तान के मध्य युद्ध-विराम की घोषणा कराई गई। इससे पहले 1948 में पाकिस्तान ने कबाइलियों के वेश में अपनी सेना को भारतीय कश्मीर में घुसाकर समूची घाटी कब्जाने का प्रयास किया, जो असफल रहा।

The Indian Army was advancing rapidly, defeating Pakistani Army, and reclaiming the Kashmiri territory they had occupied, and then that on 31st December 1947, Mr. Nehru appealed to the UNO to call on the North-West robbers of Pakistan to not to attack on India. As a result, a cease-fire was declared between India and Pakistan on January 1st, 1949. Earlier in 1948, Pakistan disguised its army into Indian Kashmir in the form of tribesmen and tried to capture the entire valley, in which they failed.

नेहरूजी के यूएनओ में चले जाने के कारण युद्धविराम हो गया और भारतीय सेना के हाथ बंध गए जिससे पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए गए शेष क्षेत्र को भारतीय सेना प्राप्त करने में फिर कभी सफल न हो सकी। आज कश्मीर में आधे क्षेत्र में नियंत्रण रेखा है तो कुछ क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सीमा। अंतरराष्ट्रीय सीमा से लगातार फायरिंग और घुसपैठ होती रहती है।

As a result of Mr. Nehru’s move to UNO, it led to a ceasefire and the Indian Army was tied up, and that is why the Indian Army could never succeed in recovering the remaining territory occupied by Pakistan. Today, half of the area in Kashmir is the Line of Control and in some of the areas we have the international border. There is constant firing and infiltration from the international border.

इसके बाद पाकिस्तान ने अपने सैन्य बल से 1965 में कश्मीर पर कब्जा करने का प्रयास किया जिसके चलते उसे मुंह की खानी पड़ी। इस युद्ध में पाकिस्तान की हार हुई। हार से तिलमिलाए पाकिस्तान ने भारत के प्रति पूरे देश में नफरत फैलाने का कार्य किया और पाकिस्तान की समूची राजनीति ही कश्मीर पर आधारित हो गई यानी कि सत्ता चाहिए तो कश्मीर को कब्जाने की बात करो। इसका परिणाम यह हुआ कि 1971 में उसने फिर से कश्मीर को कब्जाने का प्रयास किया। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसका डटकर मुकाबला किया और अंतत: पाकिस्तान की सेना के 1 लाख सैनिकों ने भारत की सेना के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और ‘बांग्लादेश’ नामक एक स्वतंत्र देश का जन्म हुआ। इंदिरा गांधी ने यहां एक बड़ी भूल की। यदि वे चाहतीं तो यहां कश्मीर की समस्या हमेशा-हमेशा के लिए सुलझ जाती, लेकिन वे जुल्फिकार अली भुट्टो के बहकावे में आ गईं और 1 लाख सैनिकों को छोड़ दिया गया।

After this, Pakistan tried to occupy Kashmir in 1965 with its military force, due to which it had to face another mouth shattering defeat. Pakistan lost in this war. Stung by the defeat, Pakistan acted to spread hatred towards India and the entire politics of Pakistan became based on Kashmir, that is, if you want power, then talk about occupying Kashmir. As a result, in 1971, Pakistan again attempted to annex Kashmir. Then, the then Prime Minister Indira Gandhi fought it out and eventually 1 lakh soldiers of the Pakistan Army surrendered to the Army of India and an independent country called 'Bangladesh' was born. Indira Gandhi made a big mistake here. If she had wished, Kashmir's problem would have been solved forever, but she was misled by Zulfikar Ali Bhutto and 1 lakh soldiers of Pakistan were released.

इस युद्ध के बाद पाकिस्तान को समझ में आ गई कि कश्मीर हथियाने के लिए आमने-सामने की लड़ाई में भारत को हरा पाना मुश्किल ही होगा। 1971 में शर्मनाक हार के बाद काबुल स्थित पाकिस्तान मिलिट्री अकादमी में सैनिकों को इस हार का बदला लेने की शपथ दिलाई गई और अगले युद्ध की तैयारी को अंजाम दिया जाने लगा लेकिन अफगानिस्तान में हालात बिगड़ने लगे। 1971 से 1988 तक पाकिस्तान की सेना और कट्टरपंथी अफगानिस्तान में उलझे रहे। यहां पाकिस्तान की सेना ने खुद को गुरिल्ला युद्ध में मजबूत बनाया और युद्ध के विकल्पों के रूप में नए-नए तरीके सीखे। यही तरीके अब भारत पर आजमाए जाने लगे।

After this war, Pakistan understood that it would be difficult to defeat India in a face-to-face battle to capture Kashmir. After a humiliating defeat in 1971, soldiers were sworn in to revenge the defeat at the Pakistan Military Academy in Kabul, and preparations for the next war began to be carried out but the situation in Afghanistan began to deteriorate. From 1971 to 1988, Pakistan's military and hardliners remained engaged in Afghanistan. Here Pakistan's army strengthened itself in guerrilla warfare and learned new methods as options for war. The same methods are now being tried on India.

पहले उसने भारतीय पंजाब में आतंकवाद शुरू करने के लिए पाकिस्तानी पंजाब में सिखों को ‘खालिस्तान’ का सपना दिखाया और हथियारबद्ध सिखों का एक संगठन खड़ा करने में मदद की। पाकिस्तान के इस खेल में भारत सरकार उलझती गई। स्वर्ण मंदिर में हुए दुर्भाग्यपूर्ण ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार और उसके बदले की कार्रवाई के रूप में 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद भारत की राजनीति बदल गई। एक शक्तिशाली नेता की जगह एक अनुभव और विचारहीन नेता राजीव गांधी ने जब देश की बागडोर संभाली तो उनके आलोचक कहने लगे थे कि उनके पास कोई योजना नहीं और कोई नीति भी नहीं है। 1984 के दंगों के दौरान उन्होंने जो कहा, उसे कई लोगों ने खारिज कर दिया। उन्होंने कश्मीर की तरफ से पूरी तरह से ध्यान हटाकर पंजाब और श्रीलंका में लगा दिया। इंदिरा गांधी के बाद भारत की राह बदल गई। पंजाब में आतंकवाद के इस नए खेल के चलते पाकिस्तान की नजर एक बार फिर मुस्लिम बहुल भारतीय कश्मीर की ओर टिक गई। उसने पाक अधिकृत कश्मीर में लोगों को आतंक के लिए तैयार करना शुरू किया। अफगानिस्तान का अनुभव यहां काम आने लगा था। तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल जिया-उल-हक ने 1988 में भारत के विरुद्ध ‘ऑपरेशन टोपाक’ नाम से ‘वॉर विद लो इंटेंसिटी’ की योजना बनाई। इस योजना के तहत भारतीय कश्मीर के लोगों के मन में अलगाववाद और भारत के प्रति नफरत के बीज बोने थे और फिर उन्हीं के हाथों में हथियार थमाने थे।

Firstly, they showed Sikhs the dream of 'Khalistan' in Pakistani Punjab and helped to set up an organization of armed Sikhs to launch terrorism in Indian Punjab. Government of India got confused in this game of Pakistan. The politics of India changed after the assassination of Mrs. Indira Gandhi on 31 October 1984 as an unfortunate Operation Blue Star at Golden Temple happened and later on Indian government took revenge for that. When an inexperienced and thoughtless leader Rajiv Gandhi took over the reins of the country in place of a powerful leader, his critics started saying that he has no plan and no policy. Many people rejected what he said during the 1984 riots. He shifted his attention completely from Kashmir to Punjab and Sri Lanka. The road to India changed after Indira Gandhi. Due to this new game of terrorism in Punjab, Pakistan's eyes once again turned towards Muslim-majority Indian Kashmir. They started preparing people for terror in Pak occupied Kashmir. The Afghanistan experience was beginning to work here. In 1988, the then President General Zia-ul-Haq planned a 'war with low intensity' against India under the name 'Operation Topak'. Under this plan, the seeds of separatism and hatred were sown in the mind of Indians Kasmiris towards India and then weapons were to be put in their hands.

कई बार मुंह की खाने के बाद पाकिस्तान ने अपने से ज्यादा शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध 90 के दशक में एक नए तरह के युद्ध के बारे में सोचना शुरू किया और अंतत: उसने उसे ‘वॉर ऑफ लो इंटेंसिटी’ का नाम दिया। दरअसल, यह गुरिल्ला युद्ध का ही विकसित रूप है।

After many mouth shattering defeats, Pakistan began to think of a new kind of war in the 90s against its more powerful enemy and eventually called it 'War of Low Intensity'. Actually, it is a developed form of guerrilla warfare.

भारतीय राजनेताओं को सब कुछ मालूम था लेकिन फिर भी वे चुप थे, क्योंकि उन्हें भारत से ज्यादा वोट की चिंता थी, गठजोड़ की चिंता थी, सत्ता में बने रहने की चिंता था। भारतीय राजनेताओं के इस ढुलमुल रवैये के चलते कश्मीर में ‘ऑपरेशन टोपाक’ बगैर किसी परेशानी के चलता रहा और भारतीय राजनेता शुतुरमुर्ग बनकर सत्ता का सुख लेते रहे। कश्मीर और पूर्वोत्तर को छोड़कर भारतीय राजनेता सब जगह ध्यान देते रहे।

Indian politicians knew everything but still they were silent, because they were worried about votes more than that of India, worried about alliances, worried about staying in power. Due to this wavering attitude of Indian politicians, 'Operation Topak' in Kashmir continued without any problem and Indian politicians continued to enjoy power by becoming ostrich. Except for Kashmir and the Northeast, Indian politicians kept paying attention to everywhere else.

‘ऑपरेशन टोपाक’ पहले से दूसरे और दूसरे से तीसरे चरण में पहुंच गया। अब उनका इरादा सिर्फ कश्मीर को ही अशांत रखना नहीं रहा, वे जम्मू और लद्दाख में भी सक्रिय होने लगे। पाकिस्तानी सेना और आईएसआई ने मिलकर कश्मीर में दंगे कराए और उसके बाद आतंकवाद का सिलसिला चल पड़ा। पहले चरण में मस्जिदों की तादाद बढ़ाना, दूसरे में कश्मीर से गैरमुस्लिमों और शियाओं को भगाना और तीसरे चरण में बगावत के लिए जनता को तैयार करना। अब इसका चौथा और अंतिम चरण चल रहा है। अब सरेआम पाकिस्तानी झंडे लहराए जाते हैं और सरेआम भारत की खिलाफत ‍की जाती है, क्योंकि कश्मीर घाटी में अब गैरमुस्लिम नहीं बचे और न ही शियाओं का कोई वजूद है।

'Operation Topak' reached from first phase to second to third stages. Its intention now was not only to keep Kashmir disturbed, it started being active in Jammu and Ladakh too. The Pakistani army and ISI organized riots in Kashmir and after that there was a series of terrorism. Increasing the number of mosques in the first phase, evacuating non-Muslims and Shias from Kashmir in the second phase and preparing the public for rebellion in the third phase. Now its fourth and final phase is underway. Now Pakistani flags are waved publicly and openly against India, because there are no non-Muslim nor Shias in the Kashmir Valley.

कश्मीर में आतंकवाद के चलते करीब 7 लाख से अधिक कश्मीरी पंडित विस्थापित हो गए और वे जम्मू सहित देश के अन्य हिस्सों में जाकर रहने लगे। इस दौरान हजारों कश्मीरी पंडितों को मौत के घाट उतार दिया गया। हालांकि अभी भी कश्मीर घाटी में लगभग 3 हजार कश्मीरी पंडित रहते हैं लेकिन अब वे घर से कम ही बाहर निकल पाते हैं।

More than 7 lakh Kashmiri Pandits were displaced due to terrorism in Kashmir and they migrated to other parts of the country including Jammu. During this time thousands of Kashmiri Pandits were killed. Although there are still about 3 thousand Kashmiri Pandits living in the Kashmir Valley, but now they hardly get out of their houses.

ब्रिटेन की ओर से विवाद शुरू करने की बात को स्वीकार करना

Britain agreed that they had started this dispute

ब्रिटेन के पूर्व विदेश मंत्री जैक स्ट्रॉ के अनुसार कश्मीर विवाद और अरब-इसराइल टकराव जैसी समस्याएँ ब्रिटेन के औपनिवेशिक अतीत की उपज हैं। भारत की स्वतंत्रता के समय ब्रितानी शासन ने ढुलमुल रवैया अपनाया था जो इस विवाद का कारण बना।[[2]](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%95%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6&oldid=4295252#cite_note-2)

According to former British Foreign Minister Jack Straw, problems such as the Kashmir dispute and the Arab-Israel conflict are a product of Britain's colonial past. At the time of India's independence, the British rule adopted a wavering attitude which led to this dispute.

स्थिति के लिए नेहरू पर आरोप

Nehru was accused for this situation

भाजपा के वरिष्ठ नेता व सांसद शांता कुमार ने कहा कि कश्मीर का विवाद देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की देन है। आजादी के बाद पाकिस्तान सेना ने हमला कर दिया और इसके जवाब में जब भारतीय सेना ने आक्रमण किया तो पूरे कश्मीर को जीतने से पहले ही भारत सरकार ने युद्ध विराम की घोषणा कर दी।[[3]](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%95%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6&oldid=4295252#cite_note-3)

Senior BJP leader and MP Shanta Kumar said that the dispute in Kashmir was a gift of Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of the country. After independence, Pakistan Army attacked and when Indian Army attacked in response, the Government of India declared a ceasefire before conquering the whole of Kashmir.

पाकिस्तान का पक्ष

Pakistan’s stand

पाकिस्तान के विदेशी मामलों और राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रधानमंत्री के सलाहकार सरताज अजीज ने कश्मीर विवाद को उठाते हुए दोनों मुल्कों के बीच मुख्य मुद्दा बताया। प्रधान मंत्री नवाज़ शरीफ ने पाक अधिकृत कश्मीर की विधानसभा में एक सत्र को संबोधित करते हुए कहा था कि जब तक कश्मीरी जनता की महत्वाकांक्षाओं के अनुसार इस विवाद का हल नहीं किया जाता, यह क्षेत्र ‘अविश्वास और तनाव’ की गिरफ्त में बना रहेगा।[[4]](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=%E0%A4%95%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80%E0%A4%B0_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6&oldid=4295252#cite_note-4)

Sartaj Aziz, the Prime Minister's advisor on Pakistan's foreign affairs and national security, raised the Kashmir dispute as the main issue between the two countries. Prime Minister Nawaz Sharif, while addressing a session in the legislative assembly of Pakistan-occupied Kashmir, said that until the dispute is resolved according to the ambitions of the Kashmiri people, the region will remain under the grip of 'mistrust and tension'.

भारत-पाकिस्तानी युद्धों

India-Pakistan Wars

1947-1948 के भारत-पाकिस्तान युद्ध, कभी-कभी प्रथम कश्मीर युद्ध के रूप में जाना जाता था, भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर के रियासत और 1 9 47 से 1 9 48 तक जम्मू के बीच लड़ा गया था। यह चार भारत-पाकिस्तान युद्धों में से पहला था दो नए स्वतंत्र राष्ट्र कश्मीर को सुरक्षित करने के प्रयास में पाकिस्तान ने वजीरिस्तान से आदिवासी लश्कर (मिलिशिया) का शुभारंभ करके आजादी के कुछ हफ्तों बाद पाकिस्तान युद्ध शुरू कर दिया था, जिसकी भविष्य में शेष राशि में लटका हुआ था। युद्ध के अनिर्णायक परिणाम अभी भी दोनों देशों के भू राजनीति को प्रभावित करता है। महाराजा को पुंछ में अपने मुस्लिम विषयों द्वारा विद्रोह का सामना करना पड़ा, और अपने राज्य के पश्चिमी जिलों पर नियंत्रण खो दिया। 22 अक्टूबर 1947 को, पाकिस्तान की पश्तून आदिवासी सेनाएं राज्य की सीमा पार कर गईं। ये स्थानीय जनजातीय लड़ाकों और अनियमित पाकिस्तानी सेनाएं श्रीनगर ले जाने के लिए चली गईं, लेकिन बारमूला तक पहुंचने पर वे लूट ले गए और स्थगित हो गए। हरि सिंह ने भारत की सहायता के लिए एक याचिका दायर की और सहायता की पेशकश की गई, लेकिन यह भारत के लिए एक समझौता करने के साधन पर हस्ताक्षर करने के अधीन था। युद्ध शुरू में जम्मू एवं कश्मीर राज्य बलों [पेज की जरूरत] और उत्तर पश्चिमी सीमावर्ती प्रांत से जुड़े फ्रंटियर आदिवासी इलाकों से आदिवासियों द्वारा लड़ा गया था। [25] राज्य के प्रवेश के बाद, भारतीय सेनाओं को राज्य की राजधानी श्रीनगर से हवा में उठाया गया। ब्रिटिश कमांडरों के अधिकारियों ने शुरू में पाकिस्तान के सैनिकों को भारत में प्रवेश के हवाले से संघर्ष में प्रवेश से इनकार कर दिया। [23] हालांकि, बाद में 1948 में, वे चिंतित थे और पाकिस्तानी सेनाओं ने इसके बाद युद्ध में प्रवेश किया था। नियंत्रण रेखा के रूप में जाना जाने के साथ-साथ मोर्चों को धीरे-धीरे दृढ़ किया गया। 31 दिसंबर 1948 की रात को एक औपचारिक युद्धविराम 23:59 बजे घोषित किया गया। : 37 9 युद्ध का परिणाम अनिर्णायक था। हालांकि, अधिकांश तटस्थ मूल्यांकन मानते हैं कि भारत युद्ध के विजेता था क्योंकि यह कश्मीर घाटी, जम्मू और लद्दाख सहित लगभग दो-तिहाई कश्मीर का सफलतापूर्वक बचाव करने में सक्षम था।

The Indo-Pakistan War of 1947–1948, sometimes known as the First Kashmir War, was fought between India and Pakistan between the princely state of Kashmir and Jammu from 1947 to 1948. This was the first of four Indo-Pakistan wars, in an effort to secure two newly independent nations Kashmir, Pakistan launched the Pakistan War a few weeks after independence by launching a tribal Lashkar (militia) from Waziristan. The inconclusive outcome of the war still affects the geopolitics of both countries. The Maharaja faced rebellion by his Muslim subjects in Poonch, and lost control of the western districts of his kingdom. On 22 October 1947, the Pashtun tribal forces of Pakistan crossed the state's border. These local tribal fighters and irregular Pakistani forces moved to Srinagar, but on reaching Barmulla they were looted and postponed. Hari Singh filed a petition for aid to India and was offered assistance, but it was subject to the signing of a means of negotiating a settlement for India. The war was initially fought by tribal from Jammu and Kashmir State Forces and Frontier tribal areas linked to the Northwest Frontier Province. After the entry of the state, Indian forces were lifted into the air from the state capital, Srinagar. Officials of British commanders initially refused entry into the conflict, citing Pakistan's entry into India. However, later in 1948, they got worried and Pakistani forces entered the war thereafter. The fronts gradually strengthened along the line known as the Line of Control. A formal ceasefire was declared at 23:59 on the night of 31 December 1948. The outcome of the war was inconclusive. However, most neutral evaluations believe that India was the winner of the war as it was able to successfully defend nearly two-thirds of Kashmir including Kashmir Valley, Jammu and Ladakh.

1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध पाकिस्तान और भारत के बीच अप्रैल 1965 और सितंबर 1965 के बीच हुई झड़पों की परिणति थी। पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर के बाद यह संघर्ष शुरू हुआ, जिसे भारतीय शासन के खिलाफ विद्रोह के लिए जम्मू-कश्मीर में सेना घुसाने के लिए डिजाइन किया गया था। भारत ने पश्चिमी पाकिस्तान पर एक पूर्ण पैमाने पर सैन्य हमले शुरू करने का जिक्र किया। सत्रह दिन के युद्ध ने दोनों पक्षों पर हज़ारों हताहतों की संख्या पैदा की और बख़्तरबंद वाहनों की सबसे बड़ी भागीदारी और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सबसे बड़ी टैंक लड़ाई देखी। [1 9] [20] संयुक्त राष्ट्र के अनिवार्य युद्धविराम के बाद सोवियत संघ और संयुक्त राज्य द्वारा राजनयिक हस्तक्षेप के बाद घोषित किए जाने और ताशकंद घोषणापत्र के बाद जारी होने के बाद दोनों देशों के बीच की लड़ाई समाप्त हो गई। [21] अधिकांश युद्ध कश्मीर में देश की जमीन बलों और भारत और पाकिस्तान के बीच की सीमा से लड़ा गया था। 1 9 47 में ब्रिटिश भारत के विभाजन के बाद से इस युद्ध ने कश्मीर में सैनिकों का सबसे बड़ा हथियार देखा, जो कि भारत और पाकिस्तान के बीच 2001-2002 के सैन्य गतिरोध के दौरान ही ढंके हुए थे। अधिकांश युद्धपोत पैदल सेना और बख्तरबंद इकाइयों का विरोध करते हुए, वायु सेना से पर्याप्त समर्थन के साथ, और नौसेना के संचालन से लड़े गए। युद्ध ने पाकिस्तान के सैन्य प्रशिक्षण के अपर्याप्त मानकों, इसके गुमराहे के चयन के अधिकारियों, गरीब कमांड और नियंत्रण व्यवस्था, खराब खुफिया जानकारी और बुरी बुद्धिमत्ता प्रक्रियाओं का पर्दाफाश किया। इन कमियों के बावजूद, पाकिस्तानी सेना बड़ी भारतीय सेना से लड़ने में कामयाब रही। [22] इस युद्ध के अन्य विवरण, जैसे अन्य भारत-पाकिस्तान युद्धों की तरह, अस्पष्ट रहते हैं। [23]

The 1965 India-Pakistan war was the culmination of the clashes between Pakistan and India between April 1965 and September 1965. The conflict began after Pakistan's Operation Gibraltar, which was designed to force troops into Jammu and Kashmir to revolt against Indian rule. India referred to launching a full-scale military attack on West of Pakistan. The seventeen-day war caused thousands of casualties on both sides and saw the largest participation of armored vehicles and the largest tank battles since World War II. The fight between the two countries came to an end after the UN mandated ceasefire was announced after diplomatic intervention by the Soviet Union and the United States and the ceasefire continued after the Tashkent Declaration. Most of the war was fought in Kashmir by the ground forces of the country and between India and Pakistan border. Since the partition of British India in 1947, this war saw the largest weapon of troops in Kashmir, which was shelved only during the 2001–2002 military standoff between India and Pakistan. Most battleships fought infantry and armored units, with substantial support from the Air Force, and naval operations. The war exposed Pakistan's inadequate standards of military training, its officers of misguided selection, poor command and control systems, poor intelligence and bad intelligence procedures. Despite these shortcomings, the Pakistani Army managed to fight the larger Indian Army. Other details of this war, like other Indo-Pakistan wars, remain unclear.